मिर्जापुर के अनजाने पर्यटन स्थल
एक छुपी हुई विरासत

उत्तर प्रदेश का मिर्जापुर अक्सर विंध्याचल धाम, अष्टभुजा माता मंदिर और चुनारगढ़ किले के कारण प्रसिद्ध है। यहां हर साल लाखों श्रद्धालु और सैलानी पहुंचते हैं। लेकिन इस धार्मिक और ऐतिहासिक पहचान के पीछे मिर्जापुर की एक ऐसी अनकही और अनदेखी दुनिया भी छुपी है, जहां अब भी प्रकृति, इतिहास और लोकसंस्कृति अपनी मूल अवस्था में जीवित है। बहुत कम लोग इन स्थलों के बारे में जानते हैं, लेकिन जो लोग यहां पहुंचते हैं, वे जीवनभर की यादें लेकर लौटते हैं। एक बार इन स्थलों की यात्रा जरूर करके देखें।

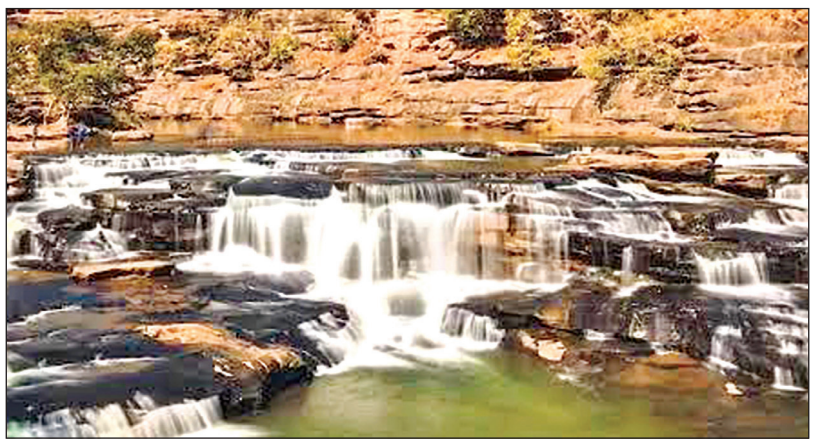

झरने, गुफाएं और प्राचीन खंडहर आकर्षण का केंद्र

मिर्जापुर केवल धार्मिक आस्था या चुनारगढ़ किले की कहानियों तक सीमित नहीं है। यहां की झरने, गुफाएं, प्राचीन खंडहर और लोककला गांव इसे एक समग्र पर्यटन स्थल बनाते हैं। अफसोस की बात यह है कि इन जगहों की जानकारी बहुत कम लोगों तक पहुंच पाती है। यदि इन छुपे रत्नों को सही पहचान और संरक्षण मिले, तो मिर्जापुर उत्तर प्रदेश का एक ऐसा केंद्र बन सकता है जहां पर्यटक आस्था, रोमांच, इतिहास और संस्कृति—सबका अनुभव एक साथ ले सकें।

लखनिया दरी जलप्रपात

- विंध्य पर्वत श्रृंखलाओं के बीच बसा लखनिया दरी जलप्रपात प्राकृतिक सौंदर्य का अद्भुत नमूना है। यहां लगभग 150 मीटर ऊंचाई से गिरता पानी पर्यटकों को मंत्रमुग्ध कर देता है। मानसून के समय इसकी खूबसूरती चरम पर होती है। खास बात यह है कि यहां भीड़ कम आती है, इसलिए शांति और रोमांच दोनों का आनंद लिया जा सकता है। ट्रैकिंग प्रेमियों के लिए भी यह जगह आदर्श है।

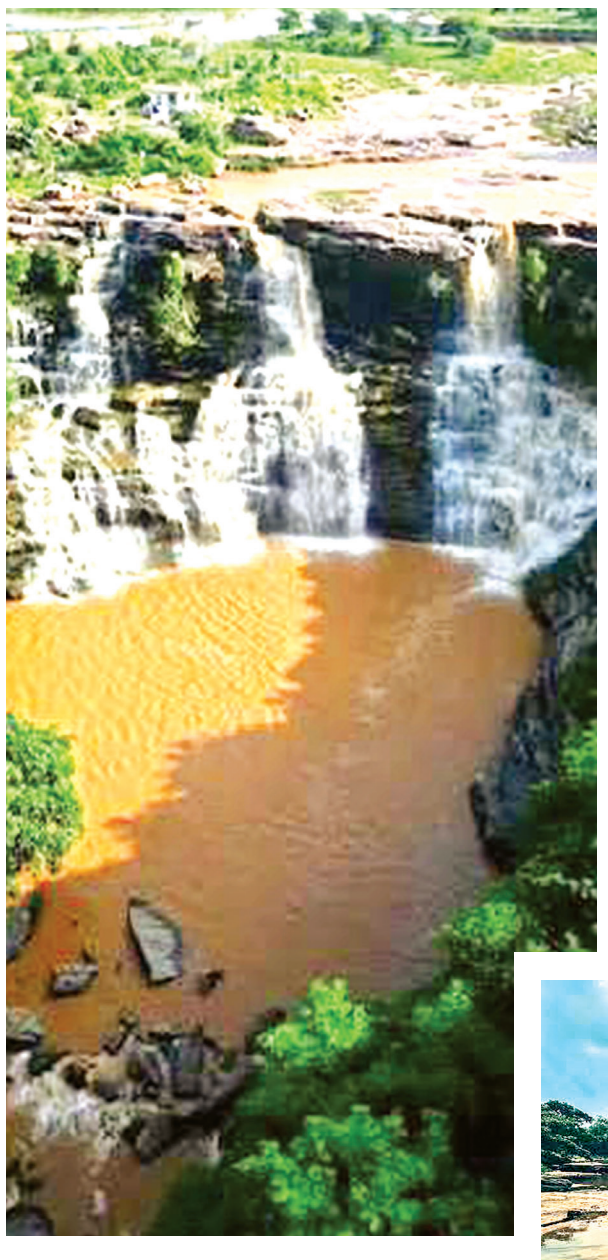

तारन जलप्रपात

- लखनिया दरी से कुछ दूरी पर स्थित तारण जलप्रपात अब तक बहुत कम लोगों तक पहुंचा है। यहां का पानी चट्टानों से टकराकर छोटे-छोटे ताल बनाता है। स्थानीय लोग मानते हैं कि यहां स्नान करने से मन और शरीर दोनों ताजगी से भर जाते हैं। यह स्थान खासकर उन लोगों के लिए उपयुक्त है, जो पर्यटन के शोरगुल से दूर प्रकृति के बीच सुकून तलाशते हैं।

मोटिया तालाब और प्राचीन शिलालेख

- मिर्जापुर शहर के पास स्थित मोटिया तालाब को कभी स्थानीय शासकों ने बनवाया था। इसकी खासियत केवल पानी का स्रोत होना नहीं है, बल्कि इसके किनारों पर बने प्राचीन शिलालेख और मूर्तियां हैं। यहां की दीवारों पर अंकित चित्र विंध्य क्षेत्र की सांस्कृतिक धरोहर को दर्शाते हैं। यह जगह आम पर्यटकों की नज़रों से दूर है, लेकिन इतिहास प्रेमियों के लिए खजाने से कम नहीं।

जटाशंकर धाम

- मिर्जापुर का जटाशंकर धाम धार्मिक दृष्टि से बेहद महत्वपूर्ण है, लेकिन बहुत कम लोग इसे जानते हैं। यहां एक गुफा जैसी संरचना है, जिसके भीतर शिवलिंग स्थित है। मान्यता है कि भगवान शिव की जटाओं से गंगा की धारा यहां प्रकट हुई थीं। यहां आने वाले श्रद्धालुओं को अध्यात्म और प्रकृति दोनों का अद्भुत संगम देखने को मिलता है।

ललित कला और लोककला गांव

- मिर्जापुर अपने कालीन उद्योग के लिए विश्व प्रसिद्ध है, लेकिन इसके आसपास कुछ गांव ऐसे भी हैं जहां आज भी लोककला, मिट्टी के बर्तन, लकड़ी की नक्काशी और पारंपरिक चित्रकला जीवित है। यह गांव किसी संग्रहालय से कम नहीं लगते। यहां जाकर पर्यटक केवल कला देखते ही नहीं, बल्कि कारीगरों से संवाद करके मिर्जापुर की धड़कन को महसूस करते हैं।

विंध्य की गुफाएं – पौराणिक रहस्य

- मिर्जापुर के पहाड़ी क्षेत्रों में कई छोटी-बड़ी गुफाएं हैं, जिनके बारे में बहुत कम लोग जानते हैं। इनमें से कई गुफाओं में शिलालेख, पौराणिक प्रतीक और साधुओं के रहने के चिह्न आज भी दिखाई देते हैं। स्थानीय मान्यता है कि यह गुफाएं कभी तपस्वियों का निवास स्थल रही होंगी। रोमांच और अध्यात्म के मिश्रण की तलाश करने वालों के लिए यह गुफाएं बेहद खास अनुभव प्रदान करती हैं।

काला पहाड़ – रोमांच का केंद्र

- मिर्जापुर का काला पहाड़ नाम की तरह रहस्यमयी है। यह काले पत्थर की ऊंची पहाड़ी है, जहां से पूरे इलाके का शानदार नज़ारा देखा जा सकता है। यहां पहुंचना आसान नहीं है, लेकिन रोमांच प्रेमियों के लिए यह ट्रैकिंग का अद्भुत अनुभव है। बहुत कम लोग इस जगह का नाम जानते हैं, लेकिन जो भी यहां आता है, प्रकृति की गोद में बिताए पल उसे अविस्मरणीय लगते हैं।

टंडा फॉल्स

- शहर की हलचल से दूर स्थित टंडा फॉल्स को मिनी नियाग्रा भी कहा जाता है। यहां का पानी कई धाराओं में बंटकर नीचे गिरता है, जिससे एक अनोखा दृश्य बनता है। खास बात यह है कि यहां स्थानीय जनजातियां आज भी अपनी संस्कृति के साथ जीती हैं। उनके नृत्य, गीत और लोककला सैलानियों को मिर्जापुर की असली आत्मा से जोड़ते हैं।

लेखक– शिवेंद्र सिंह बघेल
शिक्षक के साथ ही साहित्यकार भी हैं

स्कूल के दिन याद आते ही झूम उठता मन

अमर स्मृतियां

स्कूल के दिन यह शीर्षक ही ऐसा है जिसे सुनते या पढ़ते ही मन रोमांच से भर उठता है। यह वो सुनहरे दिन थे जो जीवन की सबसे अमर स्मृतियों में गिने जाएंगे। केजी से लेकर 12वीं तक की कक्षाओं का समय मेरे जीवन का वह समय था जिसको याद करके मन खुशियों से भर जाता है और उन पलों को जीने की चाहत फिर से जाग उठती है। स्कूल की घंटी बजने से लेकर छुट्टी की घंटी बजने तक का समय कैसे बीत जाता था पता ही नहीं चलता था। उस समय मोबाइल का दौर नहीं था इसलिए दोस्तों से बात करने के लिए पूरे 1 दिन का इंतजार करना पड़ता था। लंच टाइम में टिफिन शेयर करना, तरह-तरह के खेल खेलना उसमें जीतने की खुशी और हारने पर मिलकर हौसला बढ़ाना ,परीक्षा के दिनों का तनाव, उसके बाद छुट्टियों का उल्लास अभी भी याद आता है। उन दिनों ना तो जिम्मेदारियां का बोझ था बस परीक्षा में अच्छे अंकों से पास होने के अलावा और कोई चिंता न थी। विद्यालय का जीवन ही हमारी वास्तविक नींव है। स्कूल केवल शिक्षा प्राप्त करने का स्थान ही नहीं है बल्कि जीवन के विविध पहलुओं को दिशा देने वाला मंदिर भी है। विद्यार्थी जीवन बीते हुए बहुत समय हो गया हो, लेकिन आज के तकनीकी युग में सोशल मीडिया के द्वारा पुराने सब दोस्त फिर से मिल सके और पुरानी यादें ताजा हो पाई हैं। विद्यार्थी जीवन ,जीवन का वह सोपान है जहां ज्ञान के साथ-साथ अनुशासन ,मित्रता और संस्कारों की नींव रखी जाती है लेकिन साथ-साथ जो शरारतें और हंसी - मजाक कक्षा के बीच और बाद में होता था वह सबसे मनोरंजक पल होता था। शिक्षकों का नामकरण करना और किसी खास हावभाव को चिन्हित करना बड़ा आनंद देता था। आज टीचर किस रंग की साड़ी पहन कर आएंगी इसकी शर्त लगाने का भी अपना अलग मजा था। कक्षा में टीचर द्वारा खास मुझे चैप्टर रीडिंग करवाना या फिर कॉपियां स्टाफ रूम में रखने के लिए कहना, टीचर के अनुपस्थित होने पर खास मुझे क्लास को देखने की जिम्मेदारी देना यह सब छोटी-छोटी बातें गर्व और हर्ष का विषय बनती थी और स्पेशल फील कराती थी।आज भी कुछ टीचर्स संपर्क में है और पुरानी यादें साझा करती हैं तो बहुत अच्छा लगता है। स्कूल के दिनों में कोई ब्यूटी क्वीन, कोई गॉसिप गर्ल ,कोई टॉमबॉय कोई मिस कैटवॉक,कोई चुगली आंटी के नाम से चुपके से अलंकृत की जाती थी जो अपने आप में मनोरंजन का कारण होता था। ऐसी न जाने कितनी अनगिनत स्मृतियां हैं जिन्हें शब्दों में सीमित नहीं किया जा सकता। स्कूल के दिन हमारी स्मृतियों के वे अध्याय हैं जहां अनुशासन के साथ-साथ मित्रता का संसार बसता था। अध्यापकों के अनुशासन, स्वयं के परिश्रम एवं मित्रों के प्रेम ने जीवन को रंगीन बना दिया था। आज जब हम जीवन की जटिलताओं से थक जाते हैं तब अनायास ही हमारी स्मृतियां हमे स्कूल के दिनों की ओर सहज ही ले जातीं हैं।

लेखिका: डॉ. मनीषा चतुर्वेदी

आत्मविश्वास और दूरदर्शिता सफल एंटरप्रेन्योर की गारंटी

सफलता की कहानी

- उद्यम में सफलता के अनुभव साझा कर रहे उद्योगपति शिव कुमार अग्रवाल
- बोले-संघर्ष और समस्याओं को सुलझाना अलजेब्रा हल करने जैसा

रुद्रपुरः खुद पर भरोसा और जज्बा हो तो आप दूरदर्शिता के साथ बढ़ते हुए कामयाब एंटरप्रेन्योर बन सकते हैं। मैं उद्यम के क्षेत्र में सफल होने के लिए सच्चाई, ईमानदारी और निडरता के साथ कामयाबी की डगर पर नित नए पड़ाव तय करता रहा। एक सक्रिय स्वतंत्रता सेनानी परिवार में पैदा होने के कारण निडरता और एंटरप्रेन्योरशिप जैसे गुण मेरे जींस में रहे हैं। आजादी के कुछ साल बाद यानी 1952 में जन्म होने के बाद बावजूद मैं अपने घर पर उस जमाने के नामी नेताओं और प्रतिष्ठित लोगों का जमघट देखकर और उनसे बातचीत कर रोमांचित होता था। संयुक्त परिवार से संबंधित होने के कारण मुझे सभी संस्कार मिले थे। इसमें सबसे महत्वपूर्ण बड़ों का भरपूर आदर करना था।

14 साल की उम्र में हाईस्कूल पास किया। उस समय मातृभाषा होने के कारण अपनी हिन्दी को लेकर आत्मविश्वास था इसलिए उसे पढ़ा नहीं। उस समय के माहौल में अंग्रेजी पढ़ी नहीं गयी। हां, मेरा अलजेब्रा सबसे स्ट्रांग था और इसमें खूब मजा आता था। इसमें मैं हमेशा कम से कम 99 प्रतिशत सवाल हल कर लेता था। मुझे लगता है कि हम सभी की जिंदगी भी अलजेब्रा की तरह है। तमाम तरह के संघर्ष और समस्याओं को सुलझाना जिंदगी का अलजेब्रा हल करने जैसा ही है। मेरी तमन्ना एयरफोर्स में जाने की थी क्योंकि यह मुझे रोमांचित करता था, लेकिन घर वाले मुझे एंटरप्रेन्योरशिप की राह पर आगे बढ़ते हुए देखना चाहते थे। आखिरकार मैंने सिर्फ 18 साल की उम्र में उद्यमिता की राह पर अपने कदम बढ़ा दिए। मैंने अकेले दम पर सबसे पहले खुद की राइस मिल लगाई और फिर मुझे पीछे मुड़कर देखने की नौबत नहीं आयी। इसके बाद मैंने एक-एक करके लगातार कई यूनिट्स लगाईं। इस प्रक्रिया में मुझे जो संघर्ष करना पड़ा, उसे मैं जरूरी और किसी भी कीमत पर सस्ता समझता हूं। मेरा मानना है कि अनुभव एक पूंजी की तरह है जो किसी भी तरह हासिल करना चाहिए। भले ही इसके लिए कभी नुकसान ही क्यों न उठाना पड़े। इससे परिपक्वता आती है और आत्मविश्वास बढ़ता है। उद्यमिता की राह में मिलने वाले अनुभवों को मैंने पूरी तरह एंज्वाय किया। इससे मैं और ज्यादा निडर हुआ। मैंने अपनी अब तक की लाइफ में उतार-चढ़ाव और नुकसान बहुत देखे हैं पर मेरा मानना है कि एंटरप्रिन्योरशिप की राह सांप-सीढ़ी के खेल जैसी है। कभी किसी निर्णय से आपको बहुत लाभ मिल सकता है तो किसी भी एक निर्णय या कदम से नुकसान भी उठाना पड़ सकता है। तमाम उतार-चढ़ावों के बावजूद मैंने जमीर को कभी खराब या खत्म नहीं होने दिया। यहां तक कि अभाव महसूस होने पर भी मैंने कभी समझौता नहीं किया। शायद यही कारण है कि इससे मिलने वाली ताकत के कारण ही मैं हमेशा कांफिडेंट रहता हूं। इसके अलावा मेरे लिए सच्चाई और ईमानदारी भी बेहद महत्वपूर्ण रहे हैं। चाहे वह किसी के प्रति भी हों। मुझे लगता है कि इन गुणों के साथ अगर किसी काम के प्रति आपका डेडिकेशन है तो आपकी आईक्यू भी शार्प होगी और आप कामयाबी की राह पर निश्चित रूप से हमेशा आगे बढ़ते रहेंगे।

दोनों पुत्र भी स्थापित कर रहे कीर्तिमान

- शिवकुमार अग्रवाल के दोनों पुत्र अभिषेक एवं सौरभ भी उनके पदचिन्हों पर चल रहे हैं। उन्होंने युवा उद्यमी के तौर पर अपनी एक अलग पहचान बनायी है। शिवकुमार द्वारा लगाये गये पौधे को वटवृक्ष के रूप में विकसित कर रहे हैं। उत्तराखंड राज्य के अलावा उत्तर प्रदेश, राजस्थान, हिमाचल, आंध्र प्रदेश तक अपने व्यवसाय का विस्तार सफलतापूर्वक करते हुए संस्था को तेजी से आगे बढ़ाकर नित नये कीर्तिमान स्थापित कर रहे हैं। वर्तमान में तीसरी पीढ़ी भी कंधे से कंधा मिलाने को तत्पर है।

लेखक: डॉ. शिवकुमार अग्रवाल
उद्योगपति, ऊधमसिंह नगर